20/08/2020

PHILOSOPHY
B.A part I
Syadvada

Ajeet kumar
Assistent profess
C.M.J college.
Donwarihat.

स्याद्वाद जैन विचारधारा में परामर्श का सिद्धांत है। उल्लेखनीय है कि जैन दर्शन की तत्वमीमांसा अनेकान्तवादी है जिसमें वस्तु अनन्तधर्मात्मक मानी जाती है। अनन्तधर्मात्मक होने के कारण उसका स्वरूप अत्यधिक जटिल होता है। वस्तु के अनन्त धर्मों का ज्ञान मात्र केवली को होता है, क्योंकि वह सर्वज्ञ है। सर्वज्ञ वह है जो किसी वस्तु को सभी दृष्टियों से जानता है। उसके अनुसार यदि कोई व्यक्ति किसी वस्तु को सभी दृष्टियों से जानता है तो वह सभी वस्तुओं को सभी दृष्टियों से जान लेता है।

साधारण मनुष्य का ज्ञान अत्यधिक सीमित है, क्योंकि वह किसी वस्तु को कुछ दृष्टियों से देखता है वह वस्तु आंशिक धर्मों को ही जानता है और उसी के आधार पर वस्तु के विषय में परामर्श करता है।

जैन दर्शन अपने सिद्धांत को स्पष्ट करने के लिए अन्धे और हाथी की कहानी का उल्लेख करते हैं। छः अन्धे एक हाथी के अलग-अलग अंगों का स्पर्श करके हाथी का वर्णन करते हैं एक अन्धा हाथी के पैर का स्पर्श करके कहता है कि हाथी खम्भे के समान है दूसरा अन्धा हाथी के सूंड का स्पर्श करता है और कहता है कि हाथी अजगर के समान है। तीसरा अन्धा हाथी के कान का स्पर्श करके कहता है कि हाथी पंखे के समान है और चौथा अन्धा हाथी के पेट का स्पर्श करके कहता है कि हाथी दीवार के समान है इत्यादि प्रश्न है कि हाथी के विषय में किस अन्धे का कथन सत्य है?

प्रत्येक अन्धे का विचार है कि केवल उसी का हाथी विषयक वर्णन सत्य है। स्पष्टतः अन्धों के